आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 6 अंक : 1 सितम्बर-2018 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

(देश के 72वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर माननीय कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय के दीवान-ए-आम में ध्वजारोहण के बाद सम्बोधित भाषण के कुछ अंश यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं)

सम्मानित अतिथिगण, राजुवास के डीन–डायरेक्टर्स, फैकल्टी सदस्य, अधिकारी, कर्मचारी बंधुओ, प्रिय विद्यार्थियो, राजुवास परिवार के सदस्यगण व संभ्रान्त नागरिको, प्रेस–मीडिया के बंधुओ और बच्चों।

देश के 72वें स्वाधीनता दिवस के महापर्व पर आप सभी को मैं हार्दिक बधाई देता हूं। हमारे पूर्वजों और शहीदों के त्याग और बलिदान के कारण आज हमारा देश एक महाशक्ति बन गया है। मैं सच्चे मन से अपेक्षा करता हूं कि जिन महापुरूषों ने हमारे समाज, राज्य और देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर किया और बलिदान दिया, उनके योगदान को हम अपने जीवन में भी उतारें। आज का दिवस देश की तरक्की और विकास को याद कर संकल्प लेने का दिन है कि हम भी इसमें अपना योगदान दें।

बंधुओ ! वेटरनरी विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के 8 वर्ष में शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा के लिए 3 महाविद्यालय, 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्र और 13 पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र स्थापित कर राज्य में मूलभूत संस्था खड़ी की है। अब इनको ओर अधिक सुदृढ़ बना कर सशक्तिकरण करना है। पशुचिकित्सा शिक्षा में स्नातक स्तर पर प्रभावी पाठ्यक्रम को नए मिलिनियम के अनुकूल अगले 25 वर्ष के लिए तैयार करने की जरूरत है जिससे विद्यार्थी एक संदेश लेकर जाएं और समाज के विकास में अपना योगदान कर सकें। स्नातकोत्तर और वाचस्पति पाठ्यक्रम को कक्षा–कक्ष के अध्यापन और युवा पीढ़ी को उद्यमिता से जोड़ने की जरूरत है। आगामी 10 वर्ष की कार्यकारी योजनाएं बनाकर प्रत्येक विभाग में किए गए अच्छे शोध को सरल और संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने की जरूरत है। पशुधन अनुसंधान केन्द्रों को विकसित करने के लिए उच्च अध्ययनरत विद्यार्थियों की सेवाएं ली जानी चाहिए। देश के विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में राजुवास की स्थिति और हैल्प लाइन सेवा द्वारा 50 हजार किसानों और पशुपालकों की समस्याओं का समाधान किया जाना हमारी उपलब्धि है। हैरिटेज जीन बैंक की संकल्पना को साकार कर देशी गोवंश का संरक्षण और प्रसार का कार्य तथा भ्रूण प्रत्यारोपण कार्य को थारपारकर गौवंश के बाद कांकरेज में भी शीघ्र किया जाएगा। राजुवास ने डिजिटलाइजेशन और पशुचिकित्सा रोग निदान और उपचार कार्यों में उल्लेखनीय कार्य किए हैं। राजुवास जिलों में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के जरिए पशुपालकों व राजकीय पशुचिकित्सालयों को पशु रोग निदान सेवाएं सुलभ करवाएगा। हम वित्तीय आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाकर उपलब्ध संसाधनों से आय बढ़ाने के लिए संकल्प के साथ कार्य करेंगे। तीन वर्ष पश्चात् गणतंत्र दिवस की ''डायमण्ड जुबली'' मनाने के लिए राजुवास के सुदृढ़ीकरण के लिए सभी उपाय करेंगे। राष्ट्रवाद की भावना के साथ देश के नवनिर्माण के लिए हम सभी को अपना योगदान करना है।

जयहिन्द !

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा राजुवास के नए कुलपति

राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कल्याण सिंह ने राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा को कुलपति नियुक्त किया है। इस आशय के आदेश कुलाधिपति श्री कल्याण सिंह ने 8 अगस्त को जारी किए। प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा पशु पोषण विभाग के प्रोफेसर हैं और उन्होंने पशुचिकित्सा के क्षेत्र में देश–विदेश में अध्यापन, शिक्षा एवं अन्य वैज्ञानिक गोष्ठियों में भी सक्रिय भागीदारी निभाई है। वे वर्तमान में पांच वर्ष से भी अधिक समय तक वेटरनरी विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर के अधिष्ठाता पद पर कार्यरत रहे। नवनियुक्त कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा ने 9 अगस्त को अपना कार्य ग्रहण कर लिया। राजुवास फैकल्टी क्लब द्वारा ऑडिटोरियम में आयोजित अपने सम्मान समारोह में प्रो. शर्मा ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के 8 वर्ष में अनकों कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इस विश्वविद्यालय को आगामी 20 वर्षों के लिए तैयार करने के लिए टीम राजुवास को कड़ी मेहनत की जरूरत है। जिसे अनुशासन और संयम के साथ चलना होगा। वे विश्वविद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ आम आवाम के उपयोगी अनुसंधान कार्यों को प्राथमिकता में शामिल रखेंगे। राज्य के प्रत्येक जिले में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों, पशुधन अनुसंधान केन्दों का सुदृढीकरण और विस्तार देकर पशुपालन को ओर अधिक समृद्ध बनाने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। हमें एक कार्य संस्कृति के साथ आगे बढ़ना होगा जिसके लिए सभी के सामूहिक प्रयासों की जरूरत है।

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

72वां स्वाधीनता दिवस समारोह
कुलपति प्रो. शर्मा द्वारा ध्वजारोहण कर सलामी

72वें स्वाधीनता दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय में 15 अगस्त 2018 को आयोजित समारोह में कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने राजुवास में ध्वजारोहण कर सलामी दी। इस अवसर पर शैक्षणिक, अनुसंधान व प्रशासनिक क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा और कार्यों के लिए कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने 31 जनों को प्रशस्ति पत्र व स्मृतिचिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर देश भक्ति से ओत प्रोत गीत–नृत्य का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

राजुवास परिसर में वृक्षारोपण

स्वाधीनता दिवस समारोह के पश्चात् विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित "हरियालो राजस्थान" के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम में आंमत्रित अतिथियों में पूर्व मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, अरविन्द मिढ्ढा, मधुरिमा सिंह, मीना आसोपा, सुनील बाठिया, इनटेक के पृथ्वीराज रतनू, विद्यार्थियों, कर्मचारियों और अधिकारियों ने पौधारोपण किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा, अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा, कुलसचिव प्रो. हेमन्त दाधीच, वित्त नियंत्रक अरविन्द बिश्नोई, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. एस.सी. गोस्वामी, अनुसंधान निदेशक प्रो. आर.के. सिंह, पी.एम.ई. निदेशक प्रो.राकेश राव सहित फैकल्टी सदस्यों ने भी वृक्षारोपण किया।

यू.जी.सी. से 12-बी में अधिस्वीकरण के लिए निरीक्षण दल द्वारा राजुवास का निरीक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय को 12–बी में अधिस्वीकरण के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निरीक्षण दल ने 3 व 4 अगस्त को वेटरनरी विश्वविद्यालय का निरीक्षण कर सभी गतिविधियों की जानकारी ली।

विश्वविद्यालय के कोड़मदेसर और बीछवाल अनुसंधान केन्द्रों में हैरिटेज जीन बैंक और देशी गोवंश की नस्लों के संवर्द्धन और संरक्षण कार्यों का जायजा लिया। 4 दलीय सदस्यों ने राजुवास के औषधीय विभाग, क्लिनिक्स, शल्यचिकित्सा एवं रेडियोग्राफी विभाग तथा एल.पी.टी. और एल.पी.एम. विभागों में जाकर पशुचिकित्सा शिक्षा व उपचार और अनुसंधान कार्यों की जानकारी ली। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर राज्य की थारपारकर, साहीवाल और कांकरेज नस्लों के संवर्द्धन और चारा उत्पादन कार्यों से अवगत करवाया। दल के सदस्यों ने विश्वविद्यालय के सभी विभागों और कार्मिकों की कार्यप्रणाली की जानकारी ली। बड़े पशुओं के ऑपरेशन थिएटर, सी.टी. स्केन मशीन, पशु आइ.सी.यू. इकाई, ब्लड बैंक और ए.सी. वार्ड को देखा। उन्होंने एल.पी.टी. विभाग में तैयार किए गए पशु उत्पादों का भी जायजा लिया। निरीक्षण दल के सदस्यों ने विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं, शैक्षणेत्तर कर्मचारियों और फैकल्टी सदस्यों से अलग–अलग चर्चा कर उनके अभाव अभियोगों की जानकारी ली और विश्वविद्यालय की बेहत्तरी और कल्याण कार्यों के बाबत सुझाव भी सुने। दल के सदस्यों ने फैकल्टी द्वारा अर्जित अनुसंधान उपलब्धियों और अन्य विश्वविद्यालयों से आपसी समन्वय व एक्सचैंज कार्यों की जानकारी भी ली। यह दल विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्धारित मापदण्डों के अनुकूल विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, अनुसंधान और प्रसार कार्यों का आंकलन कर प्रतिवेदन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को प्रस्तुत करेगा जिसके आधार पर वेटरनरी विश्वविद्यालय को आयोग से वित्तीय सहायता सुलभ हो सकेगी। दल में अध्यक्ष आनंद कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति एन. सी. पटेल और सदस्य रूप में नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय जबलपुर के कुलपति प्रो. पी.डी. जुयाल, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय पंतनगर के अधिष्ठाता प्रो. जी.के. सिंह और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की संयुक्त सचिव श्रीमती ममता आर. अग्रवाल सदस्य सचिव के रूप में शामिल थे।

पशुओं के आपदा प्रबंधन पर राज्य प्रतिषाद बल के 18 जवानों का मास्टर्स प्रशिक्षण सम्पन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय में पशुओं के आपदा प्रबंधन पर राज्य आपदा प्रतिषाद बल के 18 जवानों का दस दिवसीय मास्टर्स प्रशिक्षण 8 अगस्त को संपन्न हो गया। पशुओं के बचाव और राहत के तकनीकी तौर–तरीकों पर

अब फोर्स के 18 जवानों को मार्स्टस ट्रेनिंग का गहन प्रशिक्षण दिया गया है। प्रशिक्षण के समापन समारोह में संभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए वेटरनरी कॉलेज के पूर्व क्लिनिक्स निदेशक डॉ. टी.के. गहलोत ने कहा कि आपदा से बचाव और राहत उपायों के लिए जवानों की मास्टर्स ट्रेनिंग महत्वपूर्ण हैं। इस फोर्स के जवानों का कार्य अन्य बलों के जवानों से अलग है। त्वरित राहत उपायों के लिए तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रमों से जवानों की कार्यकुशलता में अभिवृद्धि होगी। राजुवास के पशु आपदा तकनीकी प्रबंधन केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक और प्रशिक्षण के प्रभारी डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि चुनिंदा जवानों को 10 दिवसीय प्रशिक्षण में पशुचिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान और प्रायोगिक कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। पशु आपदा तकनीकी प्रबंधन केन्द्र के डॉ. सौहेल मोहम्मद और डॉ. शैलेन्द्र सिंह प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहभागी रहे। कार्यक्रम का संचालच डॉ. एस.के. झीरवाल ने किया।

राज्यपाल द्वारा गोद लिया गांव डाइयां बना स्मार्ट विलेज : अब जयमलसर बनेगा

राज्यपाल एवं कुलाधिपति कल्याण सिंह ने विश्वविद्यालयों के माध्यम से पिछड़े गांवों को गोद लेकर विकास कराने की योजना के अर्न्तगत राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के माध्यम से गोद लिए गए गांव डाइयां का नक्शा बदल गया है। इस गांव के निधारित विकास कार्य पूरे होने के बाद अब जयमलसर गांव को गोद लिया गया है। मिशन अन्त्योदय योजना के तहत जयमलसर को स्मार्ट मॉडल विलेज बनाया जाएगा। इसके लिए राज्यपाल की ओर से चैक लिस्ट भी जारी की गई। इस लिस्ट पर राज्यपाल के सचिव ने विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग भी की है।

डाइयां में हुए कार्यः गोद लिए गांव के नोडल अधिकारी राजुवास के अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने बताया कि गांव में सूचना केन्द्र की स्थापना कर ग्रामीणों को पुस्तकालय–वाचनालय सेवाएं मुहैय्या करवाई गई हैं। गांव के मध्य में स्थापित इस केन्द्र में ई–कियोस्क और कम्प्यूटर मय इंटरनेट सेवाओं से गांव देश–दुनिया से जुड़कर आधुनिकता की दौड़ में शामिल हो गया। गांव के एक मात्र राजकीय प्राथमिक विद्यालय को सौर ऊर्जा से जोड़कर विद्युतीकरण किया गया, जिससे पंखे, बल्ब, पानी के कुंड को पंप से जोड़कर पेयजल सुविधा प्रदान की गई। गांव में एक नए तालाब का निर्माण कर वर्षा जल संरक्षण का महत्ती कार्य किया गया है। पशुपालन विभाग के सौजन्य से पशुपालकों के हित में पशु उप स्वास्थ्य केन्द्र खुलवाकर स्थाई रूप से पशुपालन सेवाएं प्रदान की गई हैं। ग्राम पंचायत के सहयोग से गांव की गलियों में सड़क निर्माण कर पक्की नालियों का निर्माण करवाया गया। राजुवास द्वारा विभिन्न विभागों के समन्वय से चिकित्सा, पशुपालन, रोजगार, शिक्षा, वृक्षारोपण, स्वच्छता के शिविरों का आयोजन कर ग्रामीणों को लाभान्वित किया गया। जयमलसर में होंगे ये कार्यः– गांव के प्रभारी अधिकारी डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि जयमलसर गांव के सरपंच के साथ चर्चा के बाद गांव को स्मार्ट बनाने के लिए बनाई गई कार्य योजना को आगामी ग्राम सभा में पारित करवाकर कार्य शुरू किये जायेंगे। जयमलसर गांव में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ पौधे भी लगाए गए। अब जयमलसर में सामाजिक विकास एवं संरक्षण, स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, शिक्षा, कौशल विकास, कृषि, पर्यटन, खेल, सम्पर्क सड़क, शुद्ध पेयजल, सौर ऊर्जा जैसे कार्य होंगे।

पशुओं को आग से बचाने का हुआ डेमो

वेटरनरी विश्वविद्यालय में राज्य आपदा प्रतिषाद बल के 18 जवानों के लिए 7 अगस्त को पालतू पशुओं को अग्निकांड से बचाने का डेमो किया गया। इस अवसर पर डॉ. टी.के. गहलोत, डॉ. शैलेन्द्र सिंह शेखावत और सोहेल मोहम्मद ने वेटरनरी कॉलेज में स्थापित एस्बेस्टॉस से निर्मित आग से बचाव हट की जानकारी दी जिसमें अग्निकांड की स्थिति में ऑटोमेटिक फव्वारे चलाकर पशु को बचाने का प्रदर्शन किया गया।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 4, 9, 10, 13, 16, 18 एवं 25 अगस्त को गांव बुटिया, लूणास, देपालसर, कैलाश, घंटेल, बायला एवं रामसीसर भेड़वालिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 180 महिला पशुपालक सहित कुल 244 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा .2, 4, 6 एवं 30 अगस्त को गांव कुम्हरावाली, लालपुरा, श्यामगढ़ एवं मलकाना–कलां गांवो में तथा 3 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं 8–20 अगस्त को प्रायोजित प्रशिक्षण शिविरों में 26 महिला पशुपालकों सहित कुल 204 पशुपालकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 7, 9, 14, 16, 18, 21, 24 एवं 25 अगस्त को गांव दोयतरा, मोरस, मालीपुरा, सोनाली, मनादर, कालुम्बरी, बारीबुज एवं जुबलीगंज गांवो में तथा 13 अगस्त को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 284 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 6, 7, 8, 9, 10, 13 एवं 18 अगस्त को गांव निम्बोड़ा, अकोड़ा, कमेडिया, छापडा, खेराट, सोमणा एवं डेह गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 55 महिला पशुपालकों सहित 220 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 13, 14, 18, 21 एवं 23 अगस्त को गांव आलोली, रामावास,नूरीयावास, मोहम्मदगढ़ एवं देवलियाकलां गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 165 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

डूंगरपुर केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर द्वारा 8, 10, 13, 14 एवं 18 अगस्त को गांव नवलश्याम, भेहाना, हथोड़, करोली एवं ओड़ा बड़ा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों कुल 158 पशुपालकों ने भाग लिया।

टोंक केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 14, 16, 20, 21, 23, 24 एवं 25 अगस्त को गांव दहलोद, दयालपुरा, नोहटा, हरभगतपुरा, चैनपुरा, सिन्धडा एवं दाकिया गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 176 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर द्वारा 4, 6, 7, 8, 9, 13, 14 एवं 18 अगस्त को गांव नगला मैंथना, हरनगर, नगला ईमलीवाला, आरसी, नया बरखेड़ा, दाहिना गांव, जटपुरा एवं नगला बच्चीवाला गांवों में तथा 10 अगस्त को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 37 महिला पशुपालक सहित कुल 184 पशुपालकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 16, 18, 20, 23, 24 एवं 25 अगस्त को गांव सुरधना, गीगासर, गाढ़वाला, मोखमपुरा, कपूरीसर एवं असरासर गांवों में तथा 21 अगस्त को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 222 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कोटा केन्द्र द्वारा 265 पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., कोटा द्वारा 4, 9, 13, 14, 16, 18, 20 एवं 21 अगस्त को गांव ताथेड़, अयानी, उम्मेदपुरा, ढोरली, गोपालपुरा, ढाबरी कलां, मोरपा एवं दिल्लीपुरा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 265 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 3, 4, 9, 10, 16, 17 एवं 18 अगस्त को गांव ओछरी, बड़ का अमराना, आछोड़ा डोरीया, जाफरपूरा, केरपूरा एवं वजीरगंज गांवों में तथा 7, 14 एवं 21 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 344 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

धौलपुर केन्द्र द्वारा 367 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 13, 14, 16, 18, 21, 23, 24 एवं 25 अगस्त को गांव घुघरई, कैथरी, पथैना, उमरारा, थाने का नगला, पुरैनी, कुम्हैरी तथा दू का पुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 367 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 20, 21, 23, 24, 25 एवं 27 अगस्त को गांव पोपावास, घटियाला, राजवा, चावण्डा, बासनी सेपा एवं नारों की ढाणी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 201 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 21–24 अगस्त को गांव फेफाना तथा 7–10 अगस्त को कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर में चार दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 63 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

खुरपका-मुंहपका रोग से पशुओं का बचाव कैसे करें

खुरपका–मुंहपका एक बहुत ही तेजी से फैलने वाला विषाणुजनित रोग है। यह रोग वैसे तो किसी भी मौसम में फैल सकता है लेकिन वर्षाकाल के बाद और सर्द मौसम में पशुओं को काफी प्रभावित करता है। पशुओं में मुख्यरूप से गौवंश, भैंस, भेड़, बकरी व सूअर प्रभावित होते हैं और सम्पर्क में आने पर जंगली जानवर जैसे हिरन, चीतल, नीलगाय इत्यादि भी प्रभावित हो सकते हैं। खुरपका–मुंहपका रोग में वयस्क पशुओं में सामान्यतः मृत्यु बहुत कम होती है लेकिन दुग्ध उत्पादन व कार्य क्षमता में एकदम कमी हो जाती है जिससे पशुपालक को आर्थिक हानि होती है और छोटे बच्चों में इस रोग से मृत्यु कि संभावना बहुत ज्यादा होती है। पशुपालक इस रोग की पहचान लक्षणों के आधार पर आसानी से कर सकते हैं। इस रोग की शुरूआत में पशु सुस्त और उदास हो जाता है, तेज बुखार आता है, चारा–पानी बंद कर देता है, उसके बाद मुंह में, जीभ पर, खुरों के मध्य व थनों पर छाले हो जाते हैं, मुंह से लगातार लार गिरती है और पशु को चलने में कठिनाई होती है।

रोग से बचाव :

चूंकि यह एक विषाणुजनित रोग है अतः पशुपालक को इससे बचाव के लिए उपाय करने चाहिए। यह एक तेजी से फैलने वाला संक्रामक रोग है अतः बीमार पशुओं को अन्य स्वस्थ पशु से अलग रखें। रोग ग्रस्त पशु इस अवस्था में जीवाणुजनित या अन्य कई बीमारियों से ग्रस्त हो सकता है अतः पशुचिकित्सक से तुरंत मिलकर रोगी पशु का ईलाज करायें। इस रोग से बचाव के लिए टीका उपलबध है। पशु की 4 माह की उम्र में पहला टीका, फिर एक माह बाद दूसरा (बूस्टर) टीका, तत्पश्चात प्रति 6 माह में एक टीका लगवायें। हर साल मार्च–अप्रैल व सितम्बर–अक्टूबर माह में टीका लगवायें। पशुपालक पशु बाड़े की साफ–सफाई व पशुपोषण पर ध्यान देकर अपने पशुओं के स्वास्थ्य का ज्यादा अच्छी तरह से प्रबंधन कर सकते हैं।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

पशुओं में अफ्लाटॉक्सिन विषाक्तता के बारे में जानें

अफ्लाटॉक्सिन एक फफूंदी जनित विष है जो कि एस्परजिलस फ्लेवस एवं एस्परजिलस पैरासिटिकस नामक फफूंदी के संक्रमण से उत्पन्न होता है। ये फफूंदी अनुकूल तापमान (24–25 डिग्री सेल्सियस) व भंडारित खाद्य पदार्थों में अधिक नमी (15 प्रतिशत से अधिक) होने पर बहुधा मूंगफली, सोयाबीन, ज्वार, बाजारा, कपास, मक्का और अन्य अनाज, खल इत्यादि को संक्रमित करती है और अफ्लाटॉक्सिन उत्पन्न करती हैं। ऐसे संक्रमित खाद्य पदार्थों के सेवन से अफ्लाटॉक्सिन विषाक्तता उत्पन्न होती है। फफूंदी का संक्रमण उगती हुई फसल में या अनाज के भंडारण के समय हो सकता है। अचानक मौसम परिवर्तन से, अनाज/फसल में दीमक अथवा अन्य कीट द्वारा क्षति पहुँचने पर भी अफ्लाटॉक्सिन की सांद्रता बढ़ने की सम्भावना अधिक हो जाती है। अफ्लाटॉक्सिन मनुष्य तथा पशुओं की सभी जातियों, पक्षियों एवं मछलियों को प्रभावित करता है। जुगाली करने वाले पशु अन्य पशुओं की तुलना में अपेक्षाकृत इस रोग के लिए कम संवेदनशील होते हैं। पशुओं की सभी प्रजातियों के नवजात एवं ग्याभित पशु, वयस्क पशुओं की तुलना में, अफ्लाटॉक्सिन विषाक्तता के लिए अधिक संवेदनशील होते हैं। अफ्लाटॉक्सिन विषाक्तता के लिए मुर्गियां सबसे अधिक संवेदनशील होती हैं। जब दुधारू पशु अफ्लाटॉक्सिन से संक्रमित आहार खाता है तो ये अफ्लाटॉक्सिन उसके दूध में भी स्त्रावित होते हैं एवं ऐसे दूध के उपयोग से उपभोगकर्ता को भी अफ्लाटॉक्सिकोसिस (अफ्लाटॉक्सिन विषाक्तता से उत्पन्न रोग) हो सकता है। अफ्लाटॉक्सिन के संक्रमण के कारण फसलों के उत्पादन, विपणन एवं उत्पाद प्रसंस्करण से जुड़े लोगों को काफी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। अफ्लाटॉक्सिन के प्रभाव से पशुधन के उत्पादन में कमी होती है और पशु चिकित्सा एवं देखभाल में तथा प्रदूषित खाद्य पदार्थों के निस्तारण में भी खर्चा होता है जिसके कारण पशुपालक को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

अफ्लाटॉक्सिन मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं – बी–1,बी–2,एम–1 तथा एम–2, जिनमें बी–1 प्रकार का अफ्लाटॉक्सिन सबसे हानिकारक होता है एवं कैंसर रोग उत्पन्न कर सकता है।

अफ्लाटॉक्सिन विषाक्तता के लक्षण

इस विष का सबसे अधिक प्रभाव यकृत पर पड़ता है। गायों में इसके मुख्य लक्षण हैं – भूख ना लगना, उत्पादन घटना, प्रजनन क्षमता का कम होना, गर्भपात हो जाना, सिर चकराना इत्यादि। बछडों में अंधापन, चक्कर खाकर गिरना, कान फड़फड़ाना, दांत पीसना आदि प्रमुख लक्षण हैं।

मुर्गियों में – शारीरिक विकास का रुकना, शरीर में प्रतिरोधक क्षमता का कम होना, प्रोटीन की कमी, अंडा उत्पादन में कमी, रक्त का थक्का देर से बनना, भोजन का पाचन कम होना, शरीर में रक्त की कमी, चक्कर आना, भ्रूण की मृत्यु हो जाना आदि लक्षण पाए जाते हैं।

निदान

जैसा कि बताया गया है कि फफूंदी संक्रमित पशु/पक्षी दाने–चारे से ये विषाक्तता होती है, इसलिए पशुपालक द्वारा दी गयी जानकारी और बताये गए लक्षणों से निदान में बहुत मदद मिलती है। फीड और रक्त के नमूने लेकर प्रयोगशाला में अफ्लाटॉक्सिन की जांच की जा सकती है।

इसके अतिरिक्त मृत पशु के पोस्टमार्टम से विसरा के नमूने, और पशु चारे–दाने के नमूने लेकर प्रयोगशाला जांच करा कर इस विषाक्तता का निदान होता है।

उपचार व बचाव

- संक्रमित अनाज को पशु की पहुँच से तुरंत दूर कर देना चाहिए।
- अफ्लाटॉक्सिन का संदेह होने पर संक्रमित अनाज को जांच हेतु तुरंत प्रयोगशाला में भेज देना चाहिए एवं पशु के उपचार हेतु पशुचिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।
- कम वसा एवं अधिक प्रोटीन युक्त आहार देना चाहिए जो कि आसानी से पचने वाला हो।
- 0.5 प्रतिशत की दर से (5 किलोग्राम/टन फीड) हाइड्रेटेड सोडियम कैल्शियम एल्युमिनोसिलीकेट नामक रसायन पशु के फीड में मिलाकर पशु को देना चाहिए। यह पाचन तंत्र द्वारा अफ्लाटॉक्सिन के अवशोषण को रोकता है अर्थात् टॉक्सिन बाइंडर का कार्य करता है ।
- सहायक उपचार के तौर पर लीवर टॉनिक एवं अधिक विटामिनयुक्त भोजन देना चाहिए।
- आहार के साथ विटामिन ई एवं सेलिनियम देने से अफ्लाटॉक्सिन विषाक्तता के लक्षण दूर होते हैं।
- पशु को किसी भी तरह के अनावश्यक तनाव से बचाना चाहिए।
- अनाज भंडार क्षेत्र में चूहों एवं कीटों के प्रवेश को रोकने का पूर्ण बंदोबस्त रखना चाहिये।

–प्रो. ए. पी. सिंह, डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा,
डॉ. अमिता रंजन व डॉ. अशोक गौड़ (9461906288)
राजुवास, बीकानेर

गौवंश पालन के लिए संतुलित दाना मिश्रण कैसे बनाएं ?

पशुपालकों के लिए पशुओं के दाना मिश्रण में काम आने वाले पदार्थों की जानकारी के साथ–साथ राशन का परिकलन करने के लिए पदार्थों से प्राप्त होने वाले पाचक तत्वों जैसे कच्ची प्रोटीन, कुल पाचक तत्व और उपापचयी ऊर्जा का भी ज्ञान होना आवश्यक है। तभी पशुपालकों को भोज्य पदार्थों में पाये जाने वाले तत्वों के आधार पर संतुलित दाना मिश्रण बनाने में सहायता मिल सकेगी। नीचे तालिका में दिये गये किसी भी एक तरीके से यह दाना मिश्रण आसानी से बनाया जा सकता है, परन्तु यह इस पर भी निर्भर करता है कि कौन सी चीज सस्ती व आसानी से उपलब्ध है।

1.गेहूं / जौ / बाजरा / मक्का (दलिया)	–	20 किलो मात्रा
आटे की चोकर	–	20 किलो
बिनौले की खल	–	27 किलो
दाल की चूरी (चना, मूंग)	–	15 किलो
बिनौला	–	15 किलो
मिनरल मिक्सचर	–	02 किलो
नमक	–	01 किलो
कुल		100 किलो
2. गेहूं / जौ / मक्का (दलिया)	–	32 किलो मात्रा
चौकर	–	25 किलो
सरसों की खल	–	10 किलो
मूंगफली की खल	–	10 किलो
बिनौले की खल	–	10 किलो
दालों की चूरी	–	10 किलो
मिनरल मिक्सचर	–	02 किलो
नमक	–	01 किलो
कुल		100 किलो
3. मक्का / जौ / जई (दलिया)	–	40 किलो मात्रा
गेहूं की चौकर	–	26 किलो
बिनौले की खल	–	16 किलो
मूंगफली की खल	–	15 किलो
मिनरल मिक्सचर	–	02 किलो
नमक	–	01 किलो
कुल		100 किलो
4. जौ / मक्का / ज्वार / बाजरा (दलिया)	–	30 किलो मात्रा
गेहूं की चौकर	–	20 किलो
सरसों की खल	–	25 किलो
बिनौले की खल	–	22 किलो
मिनरल मिक्सचर	–	02 किलो
नमक	–	01 किलो
कुल		100 किलो
5. मक्का / जौ / बाजरा (दलिया)	–	40 किलो मात्रा
मूंगफली की खल	–	20 किलो
दालों की चूरी	–	17 किलो

चावल की पालिश	–	20 किलो
मिनरल मिक्सचर	–	02 किलो
नमक	–	01 किलो
कुल		100 किलो

उपरोक्त कोई भी संतुलित आहार भूसे के साथ मिलाकर दिया जा सकता है। इसके साथ कम से कम 4–5 किलो हरा चारा देना आवश्यक है।

संतुलित दाना मिश्रण कितना खिलायें

1. गाय के लिए 3–4 किलो प्रतिदिन व भैंस के लिए 4–5 किलो प्रतिदन

2. **दुधारू पशुओं के लिए :–**

- गाय में प्रत्येक 3 लीटर दूध के लिए 1 किलो अतिरिक्त दाना देना चाहिए।
- भैंस में प्रत्येक 2 लीटर दूध के लिए 1 किलो अतिरिक्त दाना देना चाहिए।

3. **ग्याभिन गाय या भैंस के लिए :** 4–5 महिने के ऊपर की ग्याभिन गाय या भैंस को 0.5–1 किलो अतिरिक्त दाना प्रति दिन देना चाहिए।
4. **बछड़े या बछड़ियों के लिए :** 1 किलो से 2 किलो दाना प्रतिदिन उनकी उम्र या वजन के अनुसार देना चाहिए।
5. **बैलों के लिए :** खेतो में काम वाले बैलो के लिए 2 से 5 किलो प्रतिदिन तथा बिना काम करने वाले बैलो के लि 1 किलो प्रतिदिन।

दाना मिश्रण के गुण व लाभः–

- यह स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है।
- ज्यादा पाचक होता है।
- पशु अधिक समय तक दुग्ध उत्पादन करते है।
- पशुओं का स्वास्थ्य ठीक रखता है।
- बीमारी से बचाने की क्षमता प्रदान करता है।
- दुग्ध व घी में भी बढ़ोतरी करता है।
- पशु उचित समय से हीट में आ जाता है।

–डॉ. मोनिका जोशी(9413234891), डॉ. अभिषेक शर्मा
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–सितम्बर, 2018

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	बांसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनूं, धौलपुर, अलवर, सवाई–माधोपुर, बून्दी, हनुमानगढ़, चूरू, कोटा, अजमेर, बीकानेर, सीकर
तीन दिन का बुखार	गौवंश, भैंस	जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जयपुर, चित्तौड़गढ़, अलवर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़, ऊंट	जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, बीकानेर, पाली, सिरोही, बूंदी, बारां
चेचक (माता रोग)	बकरी, भेड़, ऊँट	जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, हनुमानगढ़, चित्तौड़गढ़, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर
गलघोंटू	भैंस, गौवंश	हनुमानगढ़, धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, दौसा, टौंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, चित्तौड़गढ़, श्रीगंगानगर, अलवर, झुंझुनूं, अजमेर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	सीकर, सिरोही, पाली, जालोर, हनुमानगढ़, जयपुर, कोटा, बीकानेर, श्रीगंगानगर, डूंगरपुर, उदयपुर
ठप्पा रोग	गौवंश, भैंस	हनुमानगढ़, जयपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, पाली, राजसमन्द, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, नागौर
फड़किया रोग	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, कोटा, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, भीलवाड़ा, बारां, बूंदी, हनुमानगढ़
थाइलेरिओसिस एवं बबेसियोसिस	भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, चूरू, सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, जयपुर, जोधपुर, सीकर, डूंगरपुर, भीलवाडा
सर्रा (तिबरसा)	ऊँट, भैंस	बांसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, सीकर, श्रीगंगानगर, जयपुर, डूंगरपुर
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि एवं पर्ण–कृमि)	भैंस, गौवंश, भेड़, बकरी, ऊँट	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, सवाई–माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, सीकर, श्रीगंगानगर, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

सफलता की कहानी

श्री प्रकाश डेयरी से बनता है रस्सगुल्ला

श्री प्रकाश वैद्य, बीकानेर जिले से 22 किमी. दूर गांव मेघासर के रहने वाले हैं। वह लगभग 25 गायों के एक डेयरी फार्म के मालिक हैं। वे अपने डेयरी फॉर्म से रोजाना 300 लीटर दूध रस्सगुल्ला (स्वीट) के फैक्ट्री मालिकों को लगभग 22 रूपये प्रति लीटर की कीमत पर बेचते हैं। उन्होंने साथी किसानों की प्रेरणा से 5 साल पहले 2013 में केवल एक गाय के साथ दुग्ध उत्पादन शुरू किया। हालांकि उन्होंने पशुधन प्रबंधन और उत्पादन के बारे में किसी संस्था से औपचारिक प्रशिक्षण नहीं लिया लेकिन पशुओं का रखरखाव वैज्ञानिक विधि से करते हैं। पशुओं को टीकाकरण एवं कृमिनाशक दवाएं समय–समय पर देते हैं। अपने पशुओं को नियमित रूप से स्वच्छ रखते हैं। पशुचिकित्सा एवं वैज्ञानिक सलाह हेतु लगातार पशुचिकित्सक से सम्पर्क करते रहते हैं, उनके अनुसार बाह्य एवं अन्तः परजीवियों का प्रकोप पशुओं में एक बड़ी समस्या है जो कि दूध उत्पादन में कमी का कारण हैं। मवेशियों के लिए चारा अपने खेत की उपज से प्राप्त करते हैं। डेयरी की सभी गतिविधियों को अपने परिवार के सदस्यों और 3 वेतन श्रमिकों की मदद से चलाते हैं।

डेयरी फार्म चलाने के साथ–साथ वे ग्रामीणों के सहयोग से लगभग 200 देसी पशुधन की गोशाला का प्रबंधन करते हैं। वे रोजाना अपने खेत से गोशाला को चारा भी प्रदान करते हैं। गोशाला के प्रबंधन में अन्य ग्रामीणों ने भी दृढ़ता से उनका सहयोग किया। श्री प्रकाश बहुत व्यावहारिक एवं मेहनती है और आज अपने उद्यमशील चरित्र के कारण अन्य ग्रामीणों के लिए प्रेरक बने हुए है। राजुवास के वैज्ञानिकों ने मेघासर गांव में पशुपालकों की गोष्ठी के माध्यम से उन्नत पशुपालन हेतु सुझाव दिए। उन्नत पशुपालन से सम्बन्धित पत्र–पत्रिकाओं का वितरण कर उनका ज्ञानवर्द्धन किया और उन्हें पशुपालन की वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। **(सम्पर्क–प्रकाश वैद्य, मो. 9460503477)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

हरे चारे का न्याय संगत उपयोग सुनिश्चित करे

निदेशक की कलम से...

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों !

वर्षा ऋतु के साथ ही हरा चारा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। पशुओं की क्षमता के अनुसार अधिक उत्पादन के लिए सालभर हरा और पौष्टिक चारा खिलाना आवश्यक है। ऐसी स्थिति में कम क्षेत्र में अधिक चारा उत्पादन के लिए हमें सघन खेती योजना में अच्छे फसल चक्र का चुनाव करना होगा। अच्छे फसल चक्र का तात्पर्य है कि साल में तीन बार हरे चारे की खेती करना उपयुक्त है। इस चारे में घास कुल की फसलें जैसे ज्वार, बाजरा, चने, जई, नेपियर आदि के साथ–साथ फलीदार चारे की फसलें जैसे रिजका व बरसीम, चवला, ग्वार आदि उगाना श्रेष्ठतम है। फलीदार फसलों में प्रोटीन, केल्शियम, मैग्निशियम तथा फॉस्फोरस की प्रचुर मात्रा होती है जबकि घास कुल की फसलों में कॉर्बोहाइड्रेट भरपूर होता है। अतः दोनों तरह की फसलों को काटकर एक साथ मिलाकर खिलाने से आवश्यक सभी पौष्टिक तत्वों की पूर्ति हो जाती है और पशु को संतुलित आहार मिल जाता है। दो दाल वाली फसलों में मुख्यतः वार्षिक रबी फसल में बरसीम, रिजका, खरीफ में लोबिया, ग्वार तथा एक दालवाली फसलों में रबी में जई, सर्दियों की मक्का व खरीफ में मक्का, ज्वार, बाजरा, मकचरी आदि मुख्य चारे की घासें हैं। चारा फसलों के लिए हमेशा प्रमाणित बीजों का ही उपयोग करें। हरे चारे की पौष्टिकता बनाए रखने के लिए फसल की दूधिया अवस्था अथवा लगभग आधे फूल लगने पर काट कर खिलाना चाहिए। कम पानी व अत्यधिक उष्ण क्षेत्र में बहुवर्षीय सेवण व धामण जैसी बहूमूल्य घास को सभी पशुओं द्वारा बड़े चाव से खाया जाता है। बहुवर्षीय अंजन घास अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों के लिए सबसे उत्तम चारे वाली घासों में एक है। मृदा में नमी होने के अनुरूप इस घास की अगस्त से अप्रेल तक 3–4 कटाई की जा सकती है। बरमूड़ा घास या दूब वर्ष भर उगती रहती है लेकिन गर्म व नमी अवस्थाओं में विशेष रूप से सक्रिय रहती है। यह भूमि सतह पर गलीचे की तरह फैलने वाली मूल्यवान चारा वाली घास है।एक वर्षीय घासों में ''लैंप'' व मकड़ा पर्वतों के ढालों व सड़क के दोनों ओर उगी देखी जा सकती है जो कम वर्षा वाले क्षेत्र की शुष्क भूमि में उगती है। बलुई भूमि में ग्रंथिल व मूरत घासें 'हे' बनाने के लिए उपयुक्त है। सभी प्रकार की मृदाओं में एक वर्षीय ग्रीष्म ऋतु की सूडान घास को हे व साइलेज बनाने हेतु व हरे चारे के रूप में उपयोग में लिया जाता है। हरे चारे का न्याय संगत उपयोग करने से पशुओं को कुपोषण, बांझपन, गर्भपात, ग्याभिन न होना, शारीरिक कमजोरी, देरी से परिपक्व होना, वृद्धि में कमी, अंधापन, पेट छूटना या उत्पादन में कमी जैसी अनेक समस्याओं से राहत दिलाई जा सकती है। **–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **सितम्बर, 2018** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.स.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**डॉ. विजय बिश्नोई** **9928145968** एलपीएम, सीवीएएस, बीकानेर	जैविक पशुधन का महत्व	**06.09.2018**
2	**प्रो.(डॉ.) विष्णु शर्मा, कुलपति** **9460387949** राजुवास, बीकानेर	राजस्थान में पशुधन विकास में राजुवास का योगदान	**13.09.2018**
3	**डॉ. ए.के. तोमर** **9828141699** निदेशक, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर	किसानों की आय दोगुना करने में सहायक छोटे पशु भेड़, बकरी व खरगोश	**20.09.2018**
4	**डॉ. आर.के. जोशी** **9414603579** प्रभारी अधिकारी, पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर	देशी पशुओं का नस्ल सुधार कार्यक्रम	**27.09.2018**

मुस्कान !

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। **1800 180 6224**